हम हार क्यों गए स्पार्टाकस ?

पूछा था बुढ़िया ने,
मरते हुए स्पार्टाकस से।

हम तो लड़े थे,
कमजोरों के लिए,
आज़ादी और जाने कितने
अब बेमानी उसूलों के लिए,
फिर हार क्यों गए स्पार्टाकस ?

स्पार्टाकस की खून की बूंदे
गिर गीला कर रहीं थी
बुढ़िया के सफेद बाल।

उसने सूखे गले से बोलना चाहा
पर कह न सका
कि
सच जीतेगा इसलिए उसकी तरफ
नहीं खड़े रहते।

बहुत बार हारता है सत्य-
जब भी वो रखता है कदम किताबों के बाहर।
तुम्हारी हीरो वाली गाथाओं के
बाहर बहुत बार मार भी दिया जाता है सच।

उस मरते सच को बस अकेला नहीं
मरने देना है,
वो हारे भी तो उसके साथ खड़े रहना है।
क्योंकि तभी कविताओं में भी सच बच पायेगा।
गीतों में तभी हर बार विजयी होगा।

सच के साथ रहना क्योंकि
कल के लिए उसके मरे हुए टुकड़ों से
फिर नए सच के पेड़ आएंगे,
जिनके छाँव में बड़े होंगे
हमारे बच्चे,
जो एक रोज़ उन पेड़ों का
जंगल खड़ा करेंगे।

और जंगल को हराना काफी मुश्किल है।

स्पार्टाकस हार चुका था,
उसपे थूका जा रहा था,
पर क्रॉस पर भी तो खड़ा रहा
वो सच के लिए।

स्पार्टाकस मर चुका था,
बुढ़िया घर जा चुकी थी,
बिना जवाब सुने,
सब जान चुकी थी।।

- साइबर नज़र

यह सप्ताह / मेरी ताकत

कोलंबा कालीधर

जापान के एक छोटे से कसबे में रहने वाले दस वर्षीय ओकायो को जूडो सीखने का बहुत शौक था। पर बचपन में हुई एक दुर्घटना में बायाँ हाथ कट जाने के कारण उसके माता -पिता उसे जूडो सीखने की आज्ञा नहीं देते थे ।पर अब वो बड़ा हो रहा था और उसकी जिद्द भी बढती जा रही थी। अंतत: माता -पिता को झुकना ही पड़ा और वो ओकायो को नजदीकी शहर के एक मशहूर मार्शल आर्ट्सगुरु के यहाँ दाखिला दिलाने ले गए ।

गुरु ने जब ओकायो को देखा तो उन्हें अचरज हुआ कि बिना बाएँ हाथ का यह लड़का भला जूडो क्यों सीखना चाहता है ?

उन्होंने पूछा , " तुम्हारा तो बायाँ हाथ ही नहीं है तो भला तुम और लड़कों का मुकाबला कैसे करोगे ।"

" ये बताना तो आपका काम है" ,ओकायो ने कहा । मैं तो बस इतना जानता हूँ कि मुझे सभी को हराना है और एक दिन खुद "सेंसेई" (मास्टर) बनना है।

" गुरु उसकी सीखने की दृढ़ इच्छा शक्ति से काफी प्रभावित हुए और बोले , " ठीक है मैं तुम्हे सीखाऊंगा लेकिन एक शर्त है , तुम मेरे हर एक निर्देश का पालन करोगे और उसमे दृढ विश्वास रखोगे ।"

ओकायो ने सहमति में गुरु के समक्ष अपना सर झुका दिया।

गुरु ने एक साथ लगभग पचास छात्रों को जूडो सीखना शुरू किया । ओकायो भी अन्य लड़कों की तरह सीख रहा था। पर कुछ दिनों बाद उसने ध्यान दिया कि गुरु जी अन्य लड़कों को अलग -अलग दांव -पेंच सीखा रहे हैं लेकिन वह अभी भी उसी एक किक का अभ्यास कर रहा है जो उसने शुरू में सीखी थी । उससे रहा नहीं गया और उसने गुरु से पूछा , " गुरु जी आप अन्य लड़कों को नयी - नयी चीजें सीखा रहे हैं , पर मैं अभी भी बस वही एक किक मारने का अभ्यास कर रहा हूँ ।क्या मुझे और चीजें नहीं सीखनी चाहिये ?

" गुरु जी बोले , "तुम्हे बस इसी एक किक पर महारथ हासिल करने की आवश्यकता है" , और वो आगे बढ़ गए।

ओकायो को विस्मय हुआ पर उसे अपने गुरु में पूर्ण विश्वास था और वह फिर अभ्यास में जुट गया ।

समय बीतता गया और देखते - देखते दो साल गुजर गए, पर ओकायो उसी एक किक का अभ्यास कर रहा था। एक बार फिर ओकायो को चिंता होने लगी और उसने गुरु से कहा , " क्या अभी भी मैं बस यही करता रहूँगा और बाकी सभी नयी तकनीकों में पारंगत होते रहेंगे।"

" गुरु जी बोले , " तुम्हे मुझमे यकीन है तो अभ्यास जारी रखो।"

" ओकायो ने गुरु कि आज्ञा का पालन करते हुए बिना कोई प्रश्न पूछे अगले 6 साल तक उसी एक किक का अभ्यास जारी रखा। सभी को जूडो सीखते आठ साल हो चुके थे कि तभी एक दिन गुरु जी ने सभी शिष्यों को बुलाया और बोले" मुझे आपको जो ज्ञान देना था वो मैं दे चुका हूँ और अब गुरुकुल की परंपरा के अनुसार सबसे अच्छे शिष्य का चुनाव एक प्रतिस्पर्धा के माध्यम से किया जायेगा और जो इसमें विजयी होने वाले शिष्य को " सेंसेई" की उपाधि से सम्मानित किया जाएगा।

" प्रतिस्पर्धा आरम्भ हुई। गुरु जी ओकायो को उसके पहले मैच में हिस्सा लेने के लिए आवाज़ दी ।ओकायो ने लड़ना शुर किया और खुद को आश्चर्यचकित करते हुए उसने अपने पहले दो मैच बड़ी आसानी से जीत लिए। तीसरा मैच थोडा कठिन था , लेकिन कुछ संघर्ष के बाद विरोधी ने कुछ क्षणों के लिए अपना ध्यान उस पर से हटा दिया । ओकायो को तो मानो इसी मौके का इंतज़ार था , उसने अपनी अचूक किक विरोधी के ऊपर जमा दी और मैच अपने नाम कर लिया । अभी भी अपनी सफलता से आश्चर्य में पड़े ओकयो ने फाइनल में अपनी जगह बना ली । इस बार विरोधी कहीं अधिक ताकतवर, अनुभवी और विशाल था। देखकर ऐसा लगता था कि ओकायो उसके सामने एक मिनट भी टिक नहीं पायेगा।

मैच शुरू हुआ , विरोधी ओकायो पर भारी पड़ रहा था, रेफरी ने मैच रोक कर विरोधी को विजेता घोषित करने का प्रस्ताव रखा , लेकिन तभी गुरु जी ने उसे रोकते हुए कहा , " नहीं , मैच पूरा चलेगा"

मैच फिर से शुरू हुआ ।

विरोधी अतिआत्मविश्वास से भरा हुआ था और अब ओकायो को कम आंक रहा था । और इसी दंभ में उसने एक भारी गलती कर दी , उसने अपना गार्ड छोड़ दिया!! ओकयो ने इसका फायदा उठाते हुए आठ साल तक जिस किक की प्रैक्टिस की थी उसे पूरी ताकत और सटीकता के साथ विरोधी के ऊपर जड़ दी और उसे ज़मीन पर धराशाई कर दिया ।उस किक में इतनी शक्ति थी की विरोधी वहीं मुर्छित हो गया और ओकायो को विजेता घोषित कर दिया गया ।

मैच जीतने के बाद ओकायो ने गुरु से पूछा ," सेंसेई , भला मैंने यह प्रतियोगिता सिर्फ एक मूव सीख कर कैसे जीत ली ?"

" तुम दो वजहों से जीते ," गुरु जी ने उत्तर दिया ।" पहला , तुम ने जूडो की एक सबसे कठिन किक पर अपनी इतनी मास्टरी कर ली कि शायद ही इस दुनिया में कोई और यह किक इतनी दक्षता से मार पाए , और दूसरा कि इस किक से बचने का एक ही उपाय है , और वह है वोरोधी के बाएँ हाथ को पकड़कर उसे ज़मीन पर गिराना ।

कोटा में आत्महत्या करने वाली छात्रा कृति ने अपने सुसाइड नोट में लिखा था...

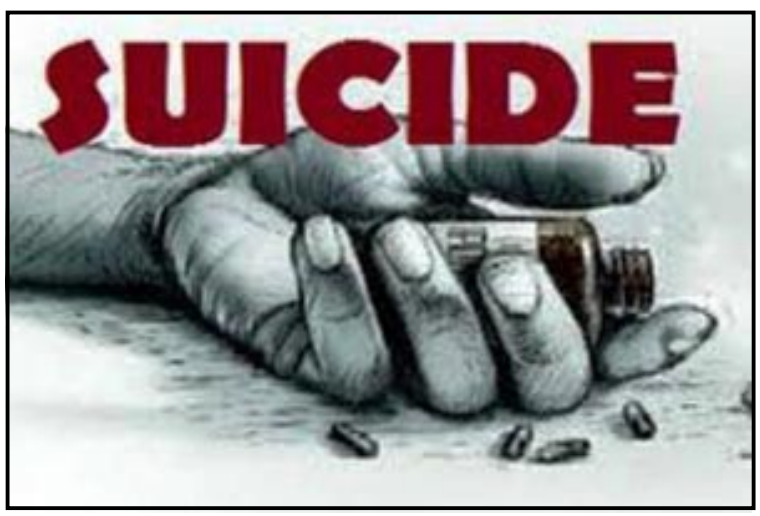

मैं भारत सरकार और मानव संसाधन मंत्रालय से कहना चाहती हूं कि अगर वो चाहते हैं कि कोई बच्चा न मरे तो जितनी जल्दी हो सके इन कोचिंग संस्थानों को बंद करवा दें, ये कोचिंग छात्रों को खोखला कर देते हैं। पढ़ने का इतना दबाव होता है कि बच्चे बोझ तले दब जाते हैं।

कृति ने लिखा है कि वो कोटा में कई छात्रों को डिप्रेशन और स्ट्रेस से बाहर निकालकर सुसाईड करने से रोकने में सफल हुई लेकिन खुद को नहीं रोक सकी। बहुत लोगों को विश्वास नहीं होगा कि मेरे जैसी लड़की जिसके 90+ मार्क्स हो वो सुसाइड भी कर सकती है, लेकिन मैं आपलोगों को समझा नहीं सकती कि मेरे दिमाग और दिल में कितनी नफरत भरी है।

अपनी मां के लिए उसने लिखा- आपने मेरे बचपन और बच्चा होने का फायदा उठाया और मुझे विज्ञान पसंद करने के लिए मजबूर करती रहीं। मैं भी विज्ञान पढ़ती रहीं ताकि आपको खुश रख सकूं। मैं क्वांटम फिजिक्स और एस्ट्रोफिजिक्स जैसे विषयों को पसंद करने लगी और उसमें ही बीएससी करना चाहती थी लेकिन मैं आपको बता दूं कि मुझे आज भी अंग्रेजी साहित्य और इतिहास बहुत अच्छा लगता है क्योंकि ये मुझे मेरे अंधकार के वक्त में मुझे बाहर निकालते हैं।

कृति अपनी मां को चेतावनी देती है कि इस तरह की चालाकी और मजबूर करनेवाली हरकत 11 वीं क्लास में पढ़नेवाली छोटी बहन से मत करना, वो जो बनना चाहती है और जो पढ़ना चाहती है उसे वो करने देना क्योंकि वो उस काम में सबसे अच्छा कर सकती है जिससे वो प्यार करती है।

इसको पढ़कर मेरा मन भी विचलित हो गया कि इस होड़-म-होड़ में हम अपने बच्चों के सपनो को छीन रहे है। आज हम लोग अपने परिवारों से प्रतिस्पर्धा करने लगे है कि फलां का बेटा-बेटी डॉक्टर बन गया,हमें भी डॉक्टर बनाना है। फलां की बेटी-बेटा सीकर/कोटा हॉस्टल में है तो हम भी वही पढ़ाएंगे,चाहे उस बच्चे के सपने कुछ भी हो...हम उन्हें अपने सपने थोंप रहे है। आज हमारे स्कूल(कोचिंग संस्थान) बच्चों को परिवारिक रिश्तों का महत्व नही सीखा पा रहे,उन्हें असफलताओं या समस्याओं से लड़ना नही सीखा पा रहे। उनके जहन में सिर्फ एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा के भाव भरे जा रहे है जो जहर बनकर उनकी जिंदगियां लील रहा है। जो कमजोर है वो आत्महत्या कर रहा है व थोड़ा मजबूत है वो नशे की ओर बढ़ रहा है।

जब हमारे बच्चे असफलताओं से टूट जाते है तो उन्हें ये पता ही नही है कि इससे कैसे निपटा जाएं। उनका कोमल हदय इस नाकामी से टूट जाता है इसी वजह से आत्महत्या बढ़ रही है।

अभिभावकों से निवेदन- आप अपने बच्चों से दोस्त बनकर बातचीत करते रहें, उनकी असफलता को उनकी कमजोरी मत बनने दें।